(132)

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के संबंध में वर्ष 2021-2022 के लिए वार्षिक प्रतिवेदन तथा ऑडिट रिपोर्ट के साथ वार्षिक एकाउंट्स को लोक सभा/ राज्य सभा के पटल पर प्रस्तुत किये जाने हेतु समीक्षा वक्तव्य

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर), स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त संगठन है। यह देश का शीर्ष और प्रमुख चिकित्सा अनुसंधान संगठन है जो बायोमेडिकल अनुसंधान की योजना, नियमन, समन्वय, कार्यान्वयन और प्रौन्नत करने का कार्य करता है। यह दुनिया के सबसे पुराने चिकित्सा अनुसंधान निकायों में से एक है। 1911 में, भारत सरकार ने देश में चिकित्सा अनुसंधान को प्रायोजित और समन्वित करने के विशिष्ट उद्देश्यों के साथ इंडियन रिसर्च फंड एसोसिएशन)आईआरएफए) की स्थापना का एक ऐतिहासिक निर्णय लिया था। आजादी के बाद, 1949 में, इसके कार्यों और गतिविधियों का विस्तार करते हुए सरकार ने आईआरएफए के स्थान पर "भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद" (आईसीएमआर) के रूप में नया नाम दिया। आईसीएमआर द्वारा वर्ष 2021-22 में आरम्भ की गयी कुछ गतिविधियां निम्नवत हैं :

1. आईसीएमआर ने कोविड-19 महामारी के प्रत्येक चरण में, जिसमें वायरस को अलग करना (आइसोलेट), नैदानिक प्रयोगशालाओं की स्थापना, किट का विकास और सत्यापन, नीति निर्धारण, डाटा का संग्रह करना और उसका रखरखाव करना, सभी आयु समूहों के लिए रोकथाम और उपचार के लिए दिशा-निर्देश तैयार करना, टीका विकसित करना और वैज्ञानिक ज्ञान के पेपरों का प्रकाशन आदि में एक अतिमहत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

2. माननीय प्रधानमंत्री द्वारा 7 दिसंबर, 2021 को पूर्वी उत्तर प्रदेश (यूपी) में चिकित्सा अनुसंधान की गतिविधियों का विस्तार करने के उद्देश्य से आईसीएमआर-क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केंद्र, गोरखपुर (आईसीएमआर-आरएमआरसीजीकेपी), के नए अत्याधुनिक भवन का उद्घाटन किया गया। यह इस वर्ष का एक उल्लेखनीय क्षण था।

3. आईसीएमआर ने वैश्विक भूख सूचकांक (जीएचआई) में प्रयुक्त संकेतकों की समीक्षा के लिए एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया। समिति ने निष्कर्ष निकाला कि संकेतक अनुपयुक्त थे। विशेषज्ञ समिति के विचार-विमर्श को इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च में एक श्वेत पत्र के रूप में प्रकाशित किया गया जिसका शीर्षक "वैश्विक भूख सूचकांक भूख को मापता नहीं है - एक भारतीय परिप्रेक्ष्य" था।

4. "संक्रामक रोग कोविड-19 से परे" यह श्वेत पत्र वर्तमान महामारी के दौरान अन्य संक्रामक रोगों से निपटने के लिए आवश्यक उपायों पर प्रकाश डालता है।

5. आईसीएमआर क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केंद्र- पूर्वोत्तर क्षेत्र (आईसीएमआर-आरएमआरसीएनई) ने बीआरसीए 1/2 जीन में सिग्नेचर म्यूटेशन की पहचान की जो पूर्वोत्तर राज्यों की जनता के लिए अद्वितीय हैं, जिनका उपयोग उच्च जोखिम वाले स्तन कैंसर वाले रोगियों के लिए ध्यान केंद्रित साइट-विशिष्ट स्क्रीनिंग के लिए किया जा सकता है। रीयल टाइम निगरानी के लिए मोबाइल सचित्र ऐप नॉर्थ ईस्टर्न स्पेस ऐपलीकेशन सेंटर (एनईएसएसी) के सहयोग से तैयार किया गया है।

6. 'एजुकेशन फॉर इफेक्टिव न्यूट्रिशन इन एक्शन (ईएनएसीटी) और फूड सिस्टम' मॉड्यूल विकसित किए गए थे। "पोषण और खाद्य प्रणाली" पर छह ई-लर्निंग मॉड्यूल भी विकसित किए गए थें और इन मॉड्यूल को स्नातक पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए छह विश्वविद्यालयों से संपर्क किया गया था।

7. भारतीय उच्च रक्तचाप नियंत्रण पहल (आईएचसीआई) को 21 राज्यों के 104 जिलों में सफलतापूर्वक लागू किया गया है; संयुक्त राष्ट्र पुरस्कार प्राप्त किया और इसे राष्ट्रीय कैंसर, मधुमेह, हृदयवाहिका रोग और आघात रोकथाम एवं नियंत्रण कार्यक्रम (एनपीसीडीसीएस) कार्यक्रम में शामिल किया गया है।

8. INSTRuCT, एक अत्याधुनिक स्ट्रोक नैदानिक परीक्षण नेटवर्क (देश में किसी भी बीमारी के लिए प्रथम) और दुनिया में चौथा (विकासशील देशों में प्रथम) 30 केंद्रों में सफलतापूर्वक स्थापित किया गया था। आईसीएमआर ने पांच अलग-अलग भारतीय भाषाओं में एक आईसीएमआर न्यूरो कांग्निटिव टूल बॉक्स (आईसीएमआर-एनटीबी) विकसित किया है, जिसका उपयोग भारत के भीतर विभिन्न लोगों में स्ट्रोक और अन्य मनोभ्रंश के कारण संज्ञानात्मक हानि का आकलन करने के लिए किया जा सकता है।

9. आईसीएमआर क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केंद्र-पोर्ट ब्लेयर (आईसीएमआर-आरएमआरसीपीबी) ने डबल फोर्टिफाइड नमक (डीईसी+आयोडीन) का व्यापक स्तर पर वितरण करते हुए मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (एमडीए) की आपूर्ति की नई लाभकारी रणनीति का प्रदर्शन किया। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप निकोबारियन जनजाति के बीच दैनिक रूप से उप-आवधिक वुचेरेरिया बैनक्रॉफ्टी के पूरे समूह में नानकोरी समूह के द्वीपों के पूरे समूहों को समाप्त करने में मदद मिली, जो भारत में एकमात्र प्रमुख लक्ष्य था।

10. आईसीएमआर- राष्ट्रीय पोषण संस्थान (आईसीएमआर-एनआईएन) ने मधुमेह संबंधी जटिलताओं और उम्र से संबंधित अपजनन स्थितियों के लिए एक कार्यात्मक खाद्य सूत्रीकरण विकसित किया है। आईसीएमआर-एनआईएन द्वारा उच्च पोषण मूल्य वाली, कई कम उपयोग वाली स्वदेशी और पारंपरिक फसलों की पहचान की गई है जो फ़सलों की विविधता को बढ़ा सकती हैं, स्थानीय मूल्य श्रृंखला में सुधार कर सकती हैं और खाद्य प्रणाली में विविधता ला सकती हैं। आईसीएमआर-एनआईएन ने ऊर्जा और प्रोटीन के लिए एनएफएसए, 2013 की अनुसूची II के लिए पोषण मानदंडों में संशोधन का प्रस्ताव दिया है। इसके अलावा, केंद्र ने पोषण 2.0 और प्रधानमंत्री पोषण कार्यक्रम के लाभार्थियों के लिए प्रोटीन की गुणवत्ता और सूक्ष्म पोषक तत्वों जैसे कैल्शियम, आयरन, जिंक, विटामिन ए, आहार फोलेट और विटामिन बी 12 के लिए मानदंड प्रदान किए।

11. सबसे बड़ी हृदय विफलता रजिस्ट्री ने 53 केंद्रों का नेटवर्क स्थापित किया और देश में पहली बार 10,700 रोगियों का पंजीकरण किया।

12. आईसीएमआर और इसके संस्थानों द्वारा सहकर्मी-समीक्षित पत्रिकाओं में प्रकाशित कोविड -19 पर समेकित शोध लेखों वाले "कोविड -19 के क्षेत्र में विश्व विज्ञान साहित्य में आईसीएमआर के योगदान" के लिए 3 संस्करण तैयार किए गए और प्रकाशित किए गए।

13. कोवैक्सिन के विकास की यात्रा और कोविड से निपटने में आईसीएमआर की अन्य उपलब्धियों को दर्शाने के लिए 2 मिनट की एक फिल्म तैयार की गई थी। इस फिल्म को जिनेवा में 'गोइंग वायरल' बुक लॉन्च और पोस्टल स्टाम्प लॉन्च के दौरान प्रदर्शित किया गया था। 16 जनवरी, 2022 को कोविड -19 टीकाकरण अभियान की वर्षगांठ के अवसर पर माननीय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के मंत्री जी द्वारा कोविड-19 वैक्सीन (बीबीवी-152) पर स्मारक के रूप में डाक टिकट जारी किया गया था। आईसीएमआर ने प्रसिद्ध क्रिकेटर श्री हरभजन सिंह को कोविड-19 जागरूकता के लिए ब्रांड एंबेसडर के रूप में शामिल करने और वैक्सीन संबंधी झिझक से निपटने के लिए संपर्क किया

और आईसीएमआर ने टीके की दूसरी खुराक लेने वाले लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए श्री हरभजन के प्रसिद्ध 'दूसरा' का उपयोग करते हुए एक लघु वीडियो संदेश और दो लघु फिल्में तैयार की हैं।

14. माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री, भारत सरकार द्वारा मेड इन इंडिया के तहत 'मोबाइल बीएसएल-3 प्रयोगशाला' का उद्घाटन 18 फरवरी, 2022 को नासिक में किया गया था।

15. आई-ड्रोन अध्ययन दक्षिण एशियाई क्षेत्र में अपनी तरह का प्रथम अध्ययन था, जहां भूमि से द्वीप तक कोविड-19 के टीकों की आपूर्ति के लिए ड्रोन का उपयोग किया गया था। इस अध्ययन में, ड्रोन ने मल्टीविटामिन टैबलेट, सिरप, कोविड-19 टीके और नियमित टीके सहित चिकित्सा आपूर्ति की 21,000 इकाइयां वितरित कीं। बिष्णुपुर जिला अस्पताल से करंग प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के बीच ड्रोन की प्रथम उड़ान का उद्घाटन माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री द्वारा किया गया।

16. इस अवधि के दौरान, 3,690 तदर्थ प्रस्ताव, 3,220 फैलोशिप और विशेष रूप से आमंत्रित 1,126 प्रस्तावों पर कार्रवाई की गई। भारत की क्लिनिकल ट्रायल रजिस्ट्री ने अब तक लगभग 50,000 क्लिनिकल परीक्षण पंजीकृत किए हैं। आईसीएमआर ने सीटीआरआई पोर्टल में आयुर्वेद अध्ययन के लिए अनुकूलित डेटासेट आइटम विकसित किया है। राष्ट्रीय कोविड रजिस्ट्री ने 55,000 से अधिक मामले दर्ज किए हैं और नीतियों और कार्यक्रमों के लिए स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (एमओएचएफडब्ल्यू) को जानकारी प्रदान करती है। कुल 26 भारतीय पेटेंट आवेदन, 01 डिजाइन आवेदन, 05 कॉपीराइट आवेदन, 10 पेटेंट सहयोग संधि (पीसीटी) आवेदन और 06 अंतर्राष्ट्रीय पेटेंट आवेदन दाखिल किए गए थें। 05 भारतीय पेटेंट और 03 अंतर्राष्ट्रीय पेटेंट को मंजूरी प्रदान की गई। कुल 995 पेपर प्रकाशित करवाए गए थे, जिनमें से लगभग 40 पेपर 20 से अधिक प्रभावशाली पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।

अधिप्रमाणित

BP

(डॉ. भारती प्रविण पवार)
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री

डॉ. भारती प्रविण पवार
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री
भारत सरकार